स्नातक:हिंदी(प्रतिष्ठा),प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र

सत्रहवीं व्याख्यानमाला

-डॉ अभिमन्यु कुमार

भक्ति आंदोलन(शेष व्याख्यान)

जहां कबीर का एक और हिंदू-मुस्लिम धर्मों का समन्वय तथा भेदभाव निवारण का उद्देश्य था वहीं दूसरी ओर उनका उद्देश्य उन रूढ़ियों एवं आडम्बरों के विरोध और खंडन का भी था जिनसे सामाजिक एकता और पारस्परिक समता की भावना को बाधा पहुंचती है। अतः यह कहा जा सकता है कि मुस्लिम प्रभावों और हिंदू संस्कारों दोनों ही

की पृष्ठभूमि लेकर कबीर की दृढ़ आस्था बनी और विकसित हुई थी।

परंतु सैद्धांतिक रूप से ईश्वर के सगुण विग्रह का खंडन नहीं किया जा सकता है। मूर्ति पूजा के रूढ़िवाद का विरोध युगीन सामाजिक आवश्यकता के रूप में चाहे स्वीकार भी किया जाए पर ईश्वर के सगुणत्व का खंडन बड़ा कठिन है। दूसरी बात यह भी है कि समाज के लिए ईश्वर का सगुण साकार रूप भी आवश्यक बन गया। उसमें व्याप्त निराशा को दूर करने के लिए तथा जीवन के सर्वांगीण विकास में उत्साह के साथ संलग्न होने के लिए सगुण साकार रूप पर आस्था आवश्यक है, अतः सगुन साकारोपासना के रूप में सगुण भक्ति

काव्य का विकास हुआ। दोनों प्रकार की उपासना सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली थी। सूरदास ने कहा कि निर्गुण निराकार के स्वरूप और गति का वर्णन असंभव है इसलिए " सब विधि अगम अगोचर ताते सूर सगुन लीला पद गावै।" सूर ने निर्गुण का खंडन नहीं किया वरन उस स्वरूप को मानते हुए भी उसके अधिक समाजोपयोगी सगुण रूप का गुणगान किया। तुलसीदास ने भी ब्रह्म के निर्गुण रूप को मानते हुए उसके सगुन, साकार तथा अवतारी रूप का प्रतिपादन किया। एक जगह पर उन्होंने कहा भी है-अगुनहिं सगुनहिं नहिं कछु भेदा।" इस प्रकार समाज की निवृति भावना एवं नैराश्य को दूर करने के लिए

तथा जीवन में सर्वांगीण विकास के लिए सगुण उपासना पर बल देकर उसका प्रचार किया गया।

सगुन उपासक संप्रदायों पर प्रभाव डालने वाली विशिष्टाद्वैत,शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत एवं द्वैतवाद के सिद्धांत थे। इस सगुण भक्ति का आश्रय लेकर राम और कृष्ण काव्य की बहुमुखी काव्य धाराएं भी प्रवाहित हुई। भक्ति योग में रामानंद द्वारा जो राम भक्ति का स्वरूप प्रकट किया गया उसमें भी सगुण निर्गुण दोनों ही रूपों के प्रति भक्ति भाव को लेकर चलने वाली भावना निहित थी। रामानंद जी की वाणी और व्यक्तित्व का 15 वी शताब्दी में और उसके बाद भी बड़ा प्रभाव रहा। उन्होंने

संस्कृत के स्थान पर लोक भाषा को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने भक्ति के लिए जाती पाती, वर्ण धर्म आदि का भेद व्यर्थ बताया। ईश्वर के सगुण निर्गुण स्वरूपों का समन्वय किया। इन बातों के कारण भक्ति सर्वजन सुगम रूप में आई तथा उसमें उदारता एवं सामाजिकता का स्वर भी मुखरित हो पाया। रामानंद के प्रभाव से उत्तरी भारत में भक्ति का व्यापक प्रचार हुआ। रामानंद की राम उपासना एक ओर तो निर्गुण रूप अपनाकर कबीर तथा उनके बाद आने वाले विभिन्न संत संप्रदायों में प्रचलित हुई और दूसरी ओर वह तुलसीदास आदि भक्तों के द्वारा सगुण उपासना के रूप में भी प्रकट हुई।